डा० विनोद निर्मल बन्सल
'[illegible]' १६६-ए [illegible]
मेरठ-250003 (यू०पी०)

(१९४)

सृजन-साधकों के लिए ज्ञानघटों की स्थापना

—श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

DEV SANSKRITI VISWAVIDHYALAYA

HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सृजन साधनों के लिए ज्ञानघटों की स्थापना

*

शारीरिक श्रम और मानसिक उत्साह की महत्ता को प्रमुख माना गया है तो भी साधनों के अभाव में कोई महत्वपूर्ण कार्य बन नहीं पड़ता। हथियार न हों तो बहादुर सैनिक भी मोर्चा फतह नहीं कर सकता। ईंट चूना न हो तो कुशल कारीगर भी इमारत खड़ी न कर सकेगा। ईन्धन-बर्तन न हो तो प्रवीण हलवाई भी किसी का पेट नहीं भर सकता। आत्मा तक को शरीर साधना के सहारे ही गतिविधियों वाली जीवनचर्या सधती है। इसके अभाव में उसे भी अदृश्य लोक में विचरण करना पड़ता है, शिक्षा और स्वास्थ्य की तरह ही आजीविका-उपार्जन की व्यवस्था बनानी पड़ती है।

हर कार्य के लिए अपने ढङ्ग के साधन चाहिए। युग निर्माण भी एक व्यापक और भारी भरकम काम है। इस धरातल पर रहने वाले ५०० करोड़ मनुष्यों के उल्टे चिन्तन, चरित्र और व्यवहार को उलट कर सीधा करना है। स्वभावों,रुझानों में इतना परिवर्तन जिसे प्रायः उल्टा कहा जा सके सामान्य काम नहीं है। इसके लिए अगणित प्रतिभाओं की ही नहीं, असीम साधनों की भी आवश्यकता पड़ेगी। नहर, पुल, सड़क, भवन बनाने के लिए कितने साधनों की आवश्यकता पड़ती है और उन्हें जुटाने के लिए कितनी दौड़धूप करनी पड़ती है उसे भुक्तभोगी ही जानते हैं। किसी पिछड़े देश को समुन्नत बनाने के लिए, कितनी सुविस्तृत योजनायें बनानी पड़ती हैं और उसके लिए, किस-किस प्रकार पर्वत जितने साधन जुटाने पड़ते हैं, इसे उनके सूत्र-संचालकों एवं कर्णधारों से ही पूँछ कर जाना जा सकता है। इन सबकी तुलना में युग परिवर्तन का कार्य कितना भारी बैठता है और उसके लिए कितने साधनों का प्रबन्ध करना होगा. इसकी कल्पना ऐसे यथार्थवादी ही कर सकते हैं जिनके सम्मुख कार्य की विशालता अपनी आवश्यकतायें लेकर खड़ी रहती हैं। कल्पना लोक में उड़ने वालों के लिए तो हर कार्य जादू तिलस्म जैसा दीखता है। उन्हें आकाश से स्वर्णमुद्रा बरसने और रातों-रात विश्वकर्मा द्वारा नये संसार का नया स्वरूप बनाकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खड़ा कर देने जैसा दिवा स्वप्न देखने में भी देर नहीं लगती है।

मिशन को पिछले दिनों प्रचार प्रक्रिया का प्रथम चरण हाथ में लेना पड़ा है। वाणी और लेखनी से बन पड़ने वाले प्रयासों से वातावरण को गरम किया गया है और वस्तुस्थिति समझने—समझाने तथा समाधान सोचने-ढूँढने के लिए जागरूकता उत्पन्न होने जैसा वातावरण बना है। दूध गरम हुआ है और मलाई तैरने का नया अध्याय जुड़ा है। अब सहानुभूति दर्शाने और समर्थन करने वालों ने सहयोग देने का साहस दिखाना आरम्भ किया है। समयदानियों की आवश्यकता पूरी हो गई, यह तो नहीं कहा जा सकता पर प्रतीत होता है कि युग शिल्पी शब्द को सार्थक करने वाले लोग समयदान की आवश्यकता समझेंगे और निजी लिप्सा-तृष्णा पर अंकुश लगाकर नवसृजन के बहुमुखी क्रिया-कलापों में संलग्न होने के लिए शूरवीरों जैसी परम्परा विनिर्मित करेंगे।

समयदान के लिए भावनाशीलों में से प्रत्येक को झकझोरा और पुचकारा ही नहीं, धिक्कारा और फुसलाया भी गया है। "हतोवा प्रप्स्यसि स्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम" से लेकर "कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्। अनार्य जुष्टमस्वर्ग्यमकीर्ति करमर्जुन" जैसी कटु भर्त्सना इसी वर्ग पर इन दिनों फिर बरसी है। "प्रज्ञावादांश्च भाषसे" वाले व्यङ्ग प्रहार करते हुए जिस-तिस बहानों की आड़ लेकर जान छुड़ाने वालों पर करारे हंटर बरसे हैं हैं। महाकाल की भर्त्सना और चुनौती ने काम किया है और इन दिनों घोर स्वार्थपरता के युग में भी युग प्रयोजनों के लिए लोगों ने एकाकी बढ़ने के कदम बढ़ाये हैं। परिवारों और मित्र सम्बन्धियों द्वारा होने वाले विरोध की भी उनने परवाह नहीं की है। लगता है कि जैसे-जैसे दिनमान की गर्मी बढ़ेगी उद्यान की कलियाँ खिले हुए पुष्प बन कर शोभा और सुगन्ध वितरण करेंगी। तालाब में कमल ही कमल खिले दृष्टिगोचर होंगे। समयदानियों की कमी न रहेगी। लोगों ने एक वर्ष के प्रज्ञा-प्रवास के लिए जिस उत्साह से समयदान दिया है उसे देखते हुए लगता है कि अगले दिनों साधु-ब्राह्मण-परम्परा का पुनर्जीवन होगा। वानप्रस्थ और परिव्राजकों के बादल घटाटोप बनकर उभरेंगे और प्यासी धरती पर दूर-दूर तक छाये हुए तपन भरे दुर्भिक्ष का जल-जंगल एक करते हुए अगले ही दिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परिस्थितियों का का कायाकल्प करेंगे ।

प्रज्ञा प्रचार की गर्मी से समयदानियों की मलाई तैरती दिखने भर से ही किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि ब्रह्मभोज के लिए जिन पकवानों की आवश्यकता है उसकी व्यवस्था बन गई । उत्साहकारी उपलब्धियाँ देखकर भी यह ध्यान रहना चाहिए कि अभी अन्यान्य साधनों का जुटाया जाना शेष है समयदान कितना ही भले हो, मणि-मुक्तकों की तरह मूल्यवान क्यों न हो मात्र उन्हीं से हार नहीं बनता, उसके साथ स्वर्ण समावेश भी तो चाहिए । प्रबुद्ध दार्शनिकों तक की गाड़ी जब कागज, कलम, स्याही के अभाव में रुक जाती है तो युग सृजन जैसे विशाल कार्य के लिए विपुल साधनों की आवश्यकता क्यों न पड़ेगी ।

प्रथम सोपान अभी पूरा होने जा रहा है । इतने भर में ढेरों साधन जुटाने की आवश्यकता पड़ रही है । जुटाने से जो सफलता मिलती है वह बढ़ती हुई आवश्यकता की तुलना में कम ही पड़ती जाती है । शान्तिकुञ्ज की इमारत और ब्रह्मवर्चस् के उपकरण देखकर उत्साह तो मिलता है पर सामने पड़े अधूरे कामों को देखते हुए लगता है कि अभी हाथ में लिए कार्यों को पूरा करने के लिए इनमें कई गुनी अभिवृद्धि होनी चाहिए । साधनों के अभाव में अत्यन्त आवश्यक योजनाओं में भी कटौती करनी पड़ती है । बढ़ते हुए कदम पीछे लौटाने पड़ते हैं ।

ठीक यही बात प्रज्ञापीठों, प्रज्ञा-संस्थानों और शाखा संगठनों के सम्बन्ध में भी है । उनके ऊपर निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक प्रयत्न न करने का लाँछन आये दिन लगता रहता है । सभी प्रज्ञापीठों को न्यूनतम पूरे समय के दो कार्यकर्त्ता नियुक्त करने चाहिए । एक भवन में चलने वाली गतिविधियों का सूत्र-संचालन करे और दूसरा जन-सम्पर्क की योजनाओं में निरत रहे । भवन की परिधि में बाल-विकास विद्यालय चलाने का प्रावधान है जिसमें शिक्षा, स्वाध्याय, हरीतिमा एवं स्वच्छता के चतुर्विधि कार्यक्रम भी प्रकारान्तर से आ जुटते हैं । पूजा-आरती के अतिरिक्त आगन्तुकों को चित्र प्रदर्शनी के माध्यम से युग-समस्याओं का स्वरूप और समाधान समझाते रहने के लिए कहा गया है । रात्रि को प्रज्ञा पुराण कथा कहने का भी प्रावधान है । यह सभी कार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलकर इतने हो जाते हैं कि एक सुयोग्य और परिश्रमी व्यक्ति को भी अन्यान्य साथी सहायकों की आवश्यकता पड़ेगी। इतना बन पड़ने पर ही कोई प्रज्ञापीठ अपनी स्थिति में प्राण चेतना रहने का दावा कर सकती है।

जनसम्पर्क के लिए एक और प्रज्ञा संस्थान की निरन्तर हलचलों को गतिशील रखने के लिए एक। इस प्रकार न्यूनतम दो कार्यकर्त्ता किसी समर्थ प्रज्ञापीठ को अपने यहां नियुक्त करने होंगे। अब ऐसे सन्त-महात्मा कहीं नहीं रहे जो घर छोड़कर सेवा-साधना के लिए समर्पित जीवन जियें। गुलछर्रे उड़ाने और मटरगश्ती करने के लिए तो साधु वेश बनाकर अनगढ़ व्यक्ति कहीं भी मिल सकते हैं पर उनसे काम क्या चलेगा। ढूँढ़ने समीपवर्ती क्षेत्र में से पड़ेंगे। जो वजनदार दीखें उन्हें शान्तिकुँज एक महीने की ट्रेनिंग के लिए भेजकर उत्तरदायित्व निभा सकने योग्य कुशल बनाने भेजें। इनके निर्वाह के लिए साधन चाहिए। पैसों का प्रबन्ध किये बिना दो-दो कार्यकर्त्ता मिलेंगे नहीं और इसके बिना निष्क्रियता हटाने का सुयोग बनेगा नहीं।

इसके अतिरिक्त अनेक काम ऐसे हैं जिनके लिए आये दिन पैसे की आवश्यकता पड़ेगी। पिछला साहित्य पढ़ लेने पर हर दिन नई रसोई परोसने के लिए उस क्षेत्र के लोगों को नया प्रज्ञा-साहित्य खरीदने की आवश्यकता बनी रहेगी। स्लाइड प्रोजेक्टर और टेप-रिकार्डर दोनों ही उपकरण ऐसे हैं जो हर महीने नई स्लाइड और नये टेपों की माँग करेंगे। इनके लिए भी पैसा चाहिए। दो नवरात्रि-आयोजन, वसन्त-पंचमी, गायत्री-जयन्ती, गुरुपूर्णिमा जैसे पर्व मनाने में भी कुछ तो खर्च होगा ही। वार्षिकोत्सव के अवसर पर बड़ा सम्मेलन करने पर उसके साधन जुटाने, जीप वाली प्रचार मण्डली का मार्ग-व्यय देने जैसी आवश्यकता रहेगी। प्रज्ञा-संस्थानों को बाल-संस्कार शाला चलाने के लिए कहा गया है। उसके साथ-साथ व्यायामशाला चलाने, हरीतिमा बढ़ाने, बीज-भंडार, पौधशाला रखने, श्रमदान, स्वच्छता के लिए झाड़ू, टोकरे आदि के लिए पैसे की आवश्यकता पड़ेगी। इमारत की मरम्मत, पुताई, सफाई, पूजा, आरती, बिजली बत्ती, बुहारी, पानी आदि के लिए भी कुछ-न-कुछ खर्च होगा।

सभी प्रज्ञा-संस्थानों को भवन-निर्माण की तरह ही ज्ञानरथ बनाने,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साहित्य-स्टोर रखने लाउडस्पीकर, टेप रिकार्डर तथा स्लाइड-प्रोजेक्टर खरीदने के लिए कहा गया है। संगीत-उपकरण एवं जन्म-दिवसोत्सवों के लिए चलती फिरती यज्ञशाला भी चाहिए। यह सभी साधन पहले दिन ही पूँजी की मांग करते हैं और फिर बाद में भी चालू खर्च के लिए पैसा चाहते हैं। इतना स्थाई प्रबन्ध न बन पड़े तो इन दिनों की मनःस्थिति को देखते हुए यह आशा पूरी होती नहीं दीखती कि कार्यकर्त्तागण ही इतना समय एवं धन नियमित रूप से खर्च करते रहेंगे। ऐसी दशा में संस्था को चलाने के लिए कुछ-न-कुछ स्थाई प्रबन्ध करना पड़ेगा, तेल के अभाव में दीपक देर तक जल नहीं सकेगा।

खर्च गिना देने के उपरान्त अब आजीविका के स्रोतों पर भी ध्यान मोड़ने की आवश्यकता है। सन्तुलन बिठाये बिना कहीं भी कोई कहने लायक प्रगति न हो सकेगी और निष्क्रियता के लिए एक-दूसरे को दोषी ठहराते रहने की विडम्बना बनी रहेगी। इससे कोई मन हलका भले ही कर ले पर प्रगति का द्वार उससे कहाँ खुलता है?

साधन जुटाने के निम्नलिखित आजीविका स्रोतों की ओर ध्यान देना चाहिए और जहाँ जिस उपाय के जिस सीमा तक सफल होने की सम्भावना है वहां उसके निमित्त लगन और तत्परता के साथ चेष्टा करनी चाहिए।

(१) ज्ञानरथ चलाने वाला इतना व्यवहारकुशल और मुस्तैद हो कि खाते-पीते शिक्षित परिवारों के साथ विशेष रूप से नियमित पढ़ाने का प्रयत्न करे। और अन्ततः इस स्थिति तक उन्हें प्रभावित करें कि घरेलू पुस्तकालय बनाने के लिए कुछ नियमित राशि खर्चने लगें। इस नियमित बिक्री से कमीशन राशि प्राप्त होगी।

(२) आरम्भ में मुफ्त पढ़ाने और वापिस लेने का क्रम ठीक है। किन्तु पीछे चस्का लगने पर इसके बदले पुस्तकालय-शुल्क जैसी कुछ मासिक राशि वसूल करने का क्रम चलाया जाय। रास्ता चलते लोगों से भी साहित्य बेचने का प्रयत्न करते रहा जाय ताकि प्रचार के साथ साथ प्रज्ञा-साहित्य के कमीशन वाला लाभांश मिलता रहे।

(३) जन्मदिवसोत्सव मनाने की योजना पर विशेष रूप से ध्यान दिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जाय । बच्चों के संस्कार भी मनाने के लिए मिशन के कार्यकर्त्ता पहुँचें। जिसके यहाँ भी आयोजन हो उसके यहाँ ज्ञानघट एवं धर्मघट स्थापित कराने की दक्षिणा का अनुरोध किया जाय। धर्मघट में एक मुट्ठी अनाज महिलायें डालती हैं। ज्ञानघट की राशि अब दस पैसे से बढ़ाकर बीस पैसा कर दी गई है। पर जिनकी आर्थिक स्थिति अधिक दुर्बल है उनसे दस पैसा डालते रहने की लिए ज्ञानघट-धर्मघट की स्थापना के लिए भी अनुरोध किया जाय।

(४) मिशन के प्रति अधिक निष्ठावानों से महीने में एक दिन की आजीविका देते रहने का अनुरोध किया जाय। या फिर वे स्वेच्छा से जितना मासिक अनुदान दे सकें उतना प्रबन्ध किया जाय।

(५) हर वर्ष एक स्मारिका प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया जाय। उनमें व्यापारियों से विज्ञापन लेकर कुछ बना लेने का प्रयत्न किया जाय।

(६) वार्षिक प्रज्ञा-आयोजन के अवसर पर गायत्री-यज्ञ, सहभोज, युग निर्माण सम्मेलन, आतिथ्य, प्रचार-मण्डली आदि के खर्च की आवश्यकता बताते हुए सार्वजनिक चन्दा किया जाय। उस अवसर पर अधिक दौड़धूप कर लेने से कुछ बचत भी हो सकती है और वह पीछे काम आ सकती है।

(७) प्रज्ञापीठ में पैसों की चढ़ोतरी की राशि बढ़ सके, ऐसे दर्शक बढ़ाने का प्रयत्न किया जाय।

(८) विशेष अवसरों पर कुछ अतिरिक्त राशि उपलब्ध करने की बात बने तो उसका भी ध्यान रखा जाय।

इसके अतिरिक्त भी अन्य उपाय हो सकते हैं जिनसे प्रज्ञापीठ की आमदनी बढ़े और आवश्यक खर्चों की पूर्ति होती रहे। यदि इमारत सड़क के किनारे है तो उसमें दुकान भी निकाली जा सकती है और ऐसे लोगों को किराये पर दी जा सकती है जो कोई अवाछनीय वस्तु न बेचें।

स्मरण रहे कि जनता के धन की एक-एक पाई का ठीक हिसाब रखना उसे हर मीटिंग में सुनाते रहना आवश्यक है। गड़बड़ी की राई-रत्ती गुञ्जाइश भी न रहने दी जाय। इस सन्दर्भ में सन्देह के जो भी छिद्र हों उन्हें कड़ाई से बन्द कर दिया जाय। सर्वसाधारण को यह विश्वास बना रहे कि हिसाब-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किताब के सम्बन्ध में वहाँ पूरी सफाई है और गोलमाल न पनपने देने पर सभी की कड़ी नजर है इससे कम में न तो जनता का विश्वास मिल सकता है और न स्थाई सहयोग। इसलिए हिसाब-किताब के प्रकटीकरण और सुरक्षित राशि को प्रमाणिक हाथों में सुरक्षित रखने की इतनी कड़ी व्यवस्था बनाई जाय कि जनता की दृष्टि में सङ्गठन की कार्यकर्ताओं की प्रमाणिकता बनी रहे। किसी को भी हिसाब-किताब देने में या पूछे जाने में हेठी अनुभव नहीं करनी चाहिए। हिसाब में ईमानदारी और स्पष्टता रहने पर ही जन-सहयोग के द्वार खुलते हैं और तथ्य पर पूरा ध्यान देने से ही अर्थ-सन्तुलन बना रहने जैसा जन-सहयोग उपलब्ध होते रहना एवं बढ़ते रहना सम्भव है।

क्र०-२२१/प्र० युग निर्माण योजना, मु०-युग निर्माण प्रेस, मथुरा। मूल्य-४०पैसे